स्टाईना

मै उसे समय के साथ तकरीबन भूल चुका था। वर्षो पहले मै उससे सिर्फ एक बार थोड़ी देर के लिए मिला था। थोड़ा बहुत परिवर्त्तन मुझमे भी आ गया था. पर उसमे तो परिवर्त्तन ही परिवर्त्तन था। हम एक दूसरे को पहचान चुके थे। मेट्रो मे जितने भी लोग बैठे हुए थे. हमे एक टक देखे चले जा रहे थे। शरीर ने तो उसका साथ छोड़ ही दिया था. शर्म और हया ने भी। नशे मे वो धुत्त थी। बात बात पर फिस्स कहके हॅसने लग पड़ती थी। उसकी आवाज तक फट गई थी।

मै उसे लिए कू डाम मेट्रो पर बाहर निकल आया। कई तो अपना सर तक हिलाये जा रहे थे। मेरे बारे मे जो सोचा जा रहा था वो मै समझ सकता था। कई शायद मेरी किस्मत पर भी रो रहे थेःइस आउसलैन्डर की किस्मत मे यही कचड़ा लिखा था।

उससे ढंग से चला तक नही जा रहा था। मै उसका हॉथ थामे बढा जा रहा था। अगल बगल से गुजरते लोग मुझे घूर कर आगे बढ जाते थे। मुझसे उनकी नजरें तक नही झेली जा रही थी। गेडेखनिश किर्से के पास एक बैंच खाली थी। बाकी की कई बैंचे भी इसी तरह के पियक्कड़ों से भरी पड़ी थी। वो अभीं बैठी ही थी कि अपने फटे चमड़े के हैन्ड बैग से एक दो लीटर वाला सस्ता सा वाईन निकाली और मेरी ओर बढाया। मना करने पर खुद ही गड़गड़ा कर उसे पानी की तरह पीने लगी।

माग्रेट का एक अल्पांश तक उसमे शेष न बचा था। थुलथुला बदन. ऑखों के नीचे आई मोटी मोटी धारियॉ. ढीला ढाला स्तन. बढे गन्दे नाखून .बेतरतीब ढंग से कटे और रंगे लाल बाल. भद्दे दॉत. जिनमे सामने के दो टूटे भी थे। मेरा उसकी बगल मे बैठना तक दूभर हो गया था। जब तब वो हॉथ बढा कर मेरी जॉघ सहलाने लग पड़ती थी। मै उसका हॉथ हटा कर गुस्से से उसे घूरता था. वो फिस्स कहके हॅसने लग पड़ती थी। मेरी समझ मे न आ रहा था कि उसका मै क्या करूॅ!दिन के उजाले मे तो उसे अपने कमरे मे लाना मेरे लिए असम्भव ही था. पर उसे ऐसी हालत मे वहॉ छोड़ना भी मुझे अमानवीय लग रहा था। ऐसे पियक्कडो के लिए तो बर्लिन के अस्पतालों और जेलों तक मे जगह नही होती है। अगर वो किसी तरह मुझे अपने बर्लिन का ही पता बता पाती तो मै उसके मॉ बाप से सम्पर्क करके उन्हे बर्लिन बुलाता। एक और बात मेरी समझ मे नही आ रही थी कि अब तक उसके मॉ बाप क्यों चुप्पी साधे बैठे हैं। वो अपनी इकलौती बेटी को क्यों इस तरह तिरस्कृत किये बैठे हैं!

माग्रेट से कुछ भी पूछना बेकार था। वो बस एक ही जिद्द पकड़े बैठी थी कि मै अपनी पैंट उतारूॅ। उसके लोगों के खुश करने की रेट बस दस मार्क है. पर मेरा काम पॉच मार्क मे ही हो जाएगा। अच्छे खासे बवाल मे मै जा फॅसा था। उसका पीना भी नही रूक रहा था। कई बार मै अपने कई दोस्तों के बारे मे सोचा. पर मुझे कोई उपयुक्त न दिख रहा था। वाकई जब मुसीबत आती है. तब हर कोई दर किनारा कर लेता है।

सारी बोतल खाली करके वो बैंच पर पसर गई और थोड़ी ही देर मे सो भी गई।

तभी मेरे दिमाग मे एक नाम गूॅजा और मुझे लगा कि बर्लिन मे शायद एक वही है जो मेरी मदद कर सकता है। बर्लिन मे मै उसे पहले दिन से ही जानता था। उसी को मैने फोन किया। वो अपनी गाड़ी लिए आया तो सही. पर सोती माग्रेट की दशा और उसके कपड़े लत्ते को देख कर तत्काल वापस लौटने को हुआःमरने दो इसे। आओ मै तुम्हे घर पहॅुचा दूॅ। कौन सी मदद करनी है तुम्हे इसकी!ये तो सोई ही हैं. सारा बर्लिन और बर्लिन का एडमिनिस्ट्रेशन भी सोया पड़ा है। यहॉ के चर्च तक सोये पड़े है। सबको अपनी जेवें ही हमारे टेक्सों से भरनी होती है।

बड़ी मिन्नत करने पर वो माग्रेट को मेरे अपार्टमेन्ट तक पहॅुचाने को राजी हुआ। रास्ते भर वो अपनी रूमाल अपनी नाक से न हटाया।

सोफे पर उसे लिटवा कर मुझे जली कटी सुना कर वो चला गया। एक धुली कम्बल माग्रेट के बदन पर डाल कर मैने स्टाईना मे थोमास का नम्बर डायल किया और उससे बिना कुछ बताए माग्रेट के माता पिता का नम्बर मॉगा. पर माग्रेट के पिता फोन पर बात करने की हालत मे न थे। शाम के छ बजे के बाद वो सिर्फ अपनी दारू से ही बात करने की अवस्था मे होते थे। माग्रेट की मॉ को ही मुझे सब कुछ बताना पड़ा। उनकी तो जैसे बोलती ही बन्द हो गई थी। अपने पति की वजह से वो लाचार थी. वरना वो तो उसी वक्त बर्लिन आने को तैयार थीं। दूसरे दिन सुबह ही सुबह वो बर्लिन चल देना चाहती थीं। ये सुन कर मेरी तो जैसे जान मे जान आई।

अपार्टमेन्ट का दरवाजा लॉक करके चाभी मैने अपने जेब मे डाली और आकर ड्राईन्गरूम मे बैठ गया। ड्राईन्गरूम मे एक ऐसी सड़ान्ध फैली हुई थी कि बिना नाक पर रूमाल रखे वहॉ बैठा नही जा सकता था। एक और बात से मै घबराये जा रहा था कि कहीं जगने के बाद माग्रेट शराब न मॉगे और मना करने पर तोड़ फोड़ न मचाना शुरू कर दे। उसकी हल्की करवट पर भी मै सिहर जाता था।

एकबारगी मेरे ऑखों के सामने मेरे अतीत का एक हिस्सा सजीव होने लगा जिससे मेरे जीवन का दस वर्ष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष जुड़ा थाः

फ्रान्कफूर्ट शहर से सत्तर किलोमीटर दूर बसे एक छोटे से गॉव स्टाईना का एक सम्पन्न किसान अपने पुश्तैनी मकान का एक हिस्सा किराये पर भी चढाता था। इस हिस्से मे तीन कमरे थे. जो एक घिरे ऑगन मे खुलते थे। वहॉ उनके खुद की बनाई एक बड़ी सी गोल मेज थी. जिसके चारो ओर लम्बी लम्बी वेन्चे लगी हुई थी। हर कमरे का किराया सन पचासी के जमाने मे तीस मार्क प्रति दिन का होता था। इस किराये मे और कई सुविधायें शामिल थी. जैसे सुवह का नाश्ता. साफ सूथरा बिस्तर. सैर के लिए एक सायकल और सबसे बड़ी बात ये थी कि ये खुद गाड़ी से अपने मेहमानों को फ्रान्कफूर्ट से ले आते थे और छोड़ जाते थे। नाश्ते के बाद बचे खाने टेबल पर से हटाये नही जाते थे. बल्कि वहीं तोप ढॅक कर छोड़ दिये जाते थे। बरामदे के एक कोने मे एक लम्बी सी मेज थी जिस पर फूल पत्ती की कढाइयों वाली एक सफेद चादर बिछी रहती थी। इस मेज पर चार पॉच बड़ी बड़ी थर्मसें कॉफी चाय या दूसरे बेरियों के शर्वतों से भरी रहती थी. जिनके खाली होते ही उन्हे फिर से भर दिया जाता था।

इन कमरों से लगा एक अर्द्धगोलाकार खुला बरामदा था. जो एक छोटे से लॉन से लगा था। इस लॉन मे भी खुद की ही बनाई मेज और बेन्चे लगी थीं।

जून का महीना चल रहा था। मेरे अलावे यहॉ एक और परिवार आया हुआ था। इनके पास एक पॉच वर्ष का बच्चा भी था। इन्होने दो कमरे ले रखे थे। नाश्ते के बाद ये घूमने निकले थे। नाश्ते पर मुझे अकेला देख कर थोमास मेरे साथ आ बैठा। वही मुझे फ्रान्कफूर्ट से लिवा आया था। खेती बारी का सारा काम वही देखता था। नाश्ते पर वो मुझे अपने परिवार के बारे मे बताता रहा। उसने दो वर्षो पहले शादी की थी। परिवार मे अभीं तक तीसरा प्राणी न आया था। उसके माता पिता साठ से ऊपर के हो चले थे। दूसरे कामों मे वो भी लगे रहते थे. पर उनसे उतना काम नही हो पाता था। थोमास की दादी नव्वे वर्ष की हो चली थी. पर घर के पीछे का बगान और सामने के लॉन का पूरा काम वही देखती थी। बस उनसे अब अपनी ऑखों की वजह से सिलाई कढाई का काम नही हो पाता था. जिनमे उनकी सबसे ज्यादे रूचि रहती थी।

हम एक संकरे पर साफ सूथरे सड़क पर बढे चले जा रहे थे। दूर दूर तक फैले खेतों मे गेहूॅ की फसले लगी थी. जो मुश्किल से हॉथ भर लम्बी

होंगी। उनमे अभी बालियॉ नही लगी थी। सड़क के किनारे न जाने कितने तरह के जंगली पौधे उग आए थे, जिनमे से कईयों के फूल तो मन को लुभा जाते थे। जब तब घिरे बाड़े भी नजर आते थे, जिनमे मोटे मोटे थनो वाली गायें घासें चरती होती थी। कई बाड़ों मे पोनीस भी नजर आ रहे थे।
बस्ती अभीं भी हमसे दूर थी। फ्रान्कफूर्ट से बाहर निकलने के बाद शायद आधे ही घन्टे ही गुजरे होंगे और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे दूर दराज तक कोई इन्सान बसता ही नही है। एक राहगीर तक नजर नही आ रहा था। जब तब बिजली के बड़े बड़े खम्बों से खींची तारों पर भूले भटके आठ दस गौरईयों का झुन्ड नजर आ जाता था या फिर सीना ताने कतारों मे खड़े बर्च के पेंड़। प्रकृति का इतना एकरस सौन्दर्य मै पहली बार देख रहा था। मेरे इर्द गिर्द एक ऐसी उबाऊ शान्ति थी जिससे रह रह कर मेरा मन घबराने लगता था।
स्टाईना पहुँचने मे हमे करीब एक घन्टे तो लगे ही होंगे। थोमास के घर वाले अपने लॉन के गेट के सामने हमारा इन्तजार करते मिले। मुझे मेरा कमरा दिखाया गया, जो बड़े ही सुरूचि से सजाया हुआ था। साफ सूथरे बिस्तर, एक पुरानी सी कपड़े की आलमारी, एक मेज और एक कुर्सी के अलावे इस कमरे मे और कुछ न था। कमरे की छत तो पक्की थी, पर दीवारें और फर्श लकड़ी की थी। फर्श पर एक ऊनी चट्टाई बिछी थी, जो थोमास की दादी घर के बचे खुचे ऊनों से बुन रखी थी। मेज पर भी उन्ही की कढाई की गई एक सफेद कवर बिछी थी, जिस पर मिट्टी का एक घड़ा रखा हुआ था जो सूर्यमुखी के ताजे फूलों से भरा हुआ था। खिड़की पर के पर्दे भी उन्ही के सिले हुए थे। कुर्सी पर एक गद्दा था, जिसकी कवर तरह तरह के कपड़ो से सिली हुई थी। बिस्तर पर पड़ी चादर भी एक तरह की पैच वर्क ही थी। मुझे थोमास ने ही बताया कि मेरी चादर दादी घर के सभी लोगों के छोड़े या फटे कपड़ो को काट काट के सिली है। मुझे इनके पैचों मे दादा की भी कई फटी कमीजें या पैंटे मिल जाएँगी।
थोमास की पत्नी को भी मैने उसके नाम उलरिके से पुकारा, पर उसके माता पिता और उसकी दादी को उनके सरनेम से, जो फ्योस्टर था।
स्कूल की पढाई थोमास ने ओस्टहागेन मे कर रखी थी, जो इस गॉव से सबसे समीप का एक कस्बा था। इसे घेरे दस गॉव थे, जो बीस से लेकर पच्चास किलोमीटर की दूरी पर फैले हुए थे। थोमास की छोटी बहन एलेन को गॉव की जिन्दगी रास न आई। उसने स्टाईना को अल्विदा कहा और फ्रान्कफूर्ट मे एक हयोक्स्ट नाम के विश्वविख्यात दवादारू के फर्म मे नौकरी करने लगी और वहीं रहने लगी। उसका जब मन होता था, स्टाईना आती थी, जब मन होता था बापस चली जाती थी।
स्टाईना गॉव कुल बत्तीस घरों का गॉव था, जो मुश्किल से एक किलोमीटर लम्बे सड़क के दोनो ओर बसा हुआ था। हर घर दुमंजिला और एक अहाते से घिरा हुआ था। शायद ही ऐसा कोई घर रहा होगा, जिसके अहाते मे मुझे शीशो की छतों और एक बड़े दरवाजों वाला खलिहान घर न दिखा हो। घर के सामने एक हरा भरा लान और घर के पीछे सब्जियों का बगान प्रायः सभी के पास था। हर अहाते मे मुझे एक दो गाड़ियॉ भी नज़र आई। पूरे गॉव मे बस तीन दुकाने थी। एक कसाई की, दूसरी शराब की और तीसरी जरूरत के हर सामानों की। एक लेटर बॉक्स भी मुझे दिखा, जो दिन मे सिर्फ एक बार खाली किया जाता था। न कोई थाना, न कोई पोस्टऑफिस, न कोई डिस्को और न ही कोई सिनेमाघर, पर हर घर मे टेलीविजन और टेलीफोन था। यहॉ का हर परिवार अपनी ही दुनिया मे जी रहा था और खोया हुआ था। गॉव की पूरी सड़क बिल्कुल निर्जन और विरान थी। यहॉ के लोग भी बेहद अर्न्तमुखी थे। नमस्ते तक का जबाब भी नही देना जानते थे। पता नही दूसरे लोंगों से घूलने मिलने मे इन्हे किस तरह की घबराहट होती थी! आधे घन्टे मे ही मै पूरे गॉव का चक्कर लगा कर वापस आ गया।
थोमास के घर का अहाता जालीदार तारों से घिरा हुआ था। गेट खोलने के बाद एक पक्का रास्ता उसके घर के मूख्य द्वार तक जाकर फिर बॉई ओर मुड़ कर मकान के उस हिस्से की ओर जाता था, जहॉ मै ठहरा हुआ था। घर के सामने वाले लॉन मे सेब के तीन छोटे पेंड़ सेवों से लदे पड़े थे। एक आलूचे का भी पेंड़ था, जो फलों से गदराया पड़ा था। मेरे कमरे से लगे बरामदे के सामने एक्समस का लगा पेंड़ आसमान छू रहा था। बाद मे मुझे पता लगा कि ये पेंड़ थोमास के दादा ने जब रोपा था, तो वो मुश्किल से पॉच सेन्टीमीटर ऊँचा रहा होगा। समय के साथ वो बढता चला गया। दादी उसे काटने छॉटने ही नही देंती और मॉ को हमेशा ये डर लगा रहता है कि कहीं अगर ये पेंड़ किसी ऑधी से गिरा नही कि आधे से ज्यादे मकान का सत्यानाश कर जाएगा।
लॉन की पतली पतली क्यारियॉ रंग बिरंगे टयूलिप के फूलों से भरी पड़ी थी। लॉन के बॉई ओर लकड़ी का एक छोटा सा घर था, जो एक लकड़ी की बनी दीवारों से घिरा था, पर ये घेरा कोई खास ऊँचा न था। इस घेरे से लगी ही एक छोटी सी पानी की टाईख थी, जिसके एक किनारे पर बैठने के लिए एक घाट भी बना था। इस छोटे से बाड़े मे अट्ठारह बड़े बड़े बर्फ़ की तरह सफेद हंस घूम रहे थे, जो रह रह कर अपनी चोंचो से अपनी लम्बी गर्दन खुजलाते रहते थे। रह रह कर ये पास की छोटी सी तालाब मे डुबकी भी लगा आते थे, फिर अपनी चौवों पर खड़े हो कर अपने पंख फड़फड़ा कर उन्हे सुखाते थे।
एक्समस से पहले गॉव का ही कसाई एक एक हंस बीस बीस मार्क मे खरीद ले जाता था। मार्च या अप्रील मे फिर इस बेड़े मे छोटे छोटे छोटे चूज्जे आ जाते थे। महीनो ये अपनी सुन्दरता लॉन मे बिखेरते रहते थे, फिर जवान हो कर इस परिवार को विदाई के वक्त चार पॉच सौ मार्क भेंट मे दे जाते थे।
इस परिवार मे नही भी तो दो हजार मोर्गन जमीन तो रही ही होगी, पर उनमे सिर्फ गेहूँ ही बोया जाता था। खड़ी की खड़ी फसल बेच दी जाती थी। गेहूँ का एक भी दाना घर मे नही आता था।
इस परिवार का खलिहान घर मकान से जरा हट कर था। इनके पास तकरीबन तीस गायें थी, जिनके दूध मशीनो से दूहे जाते थे और वो भी दिन मे तीन बार। हर दिन हजारों लीटर दूध वो देती थी। सारे दूध बेच दिए जाते थे। उनकी थनो पर दूध का इतना दबाब होता था कि उन्हे अपने बछडों तक की भी जरूरत नही पड़ती थी। बछड़े भी भी खा पी कर मस्त हुए नही कि उन्हे भी बेच दिया जाता था।
खाने पहनने का सारा सामान इस परिवार मे खरीदा जाता था, यहॉ तक कि जानवरों के लिए चारे तक भी। ये परिवार बस फूल फल और सब्जियॉ नही खरीदता था। मकान के पिछले भाग मे भी कई सेब और नासपाती के पेंड़ थे। इनके अलावे हर किस्म की बेरियों के झाड़ बेरियों से लदे पड़े थे। पीछे की जमीन क्रमशः ऊँची होती चली गई थी। बीच से एक संकरा रास्ता ऊपर तक जाता था। रास्ते के दोनो ओर क्यारियॉ बनी हुई थी, जिनमे आलू टमाटर मूली बीन्स हरी प्याज फूल गोभी पात गोभी और न जाने कितने किस्म की हरी हरी सलादें लगी हुई थी।
थोमास और उलरिके के जिम्मे खेती और गायें थीं। उसकी दादी और पिता के जिम्मे बगान था। घर की तमाम खरीददारियॉ भी उसके पिता ही करते थे। मॉ के जिम्मे पूरे घर की सफाई, रसोई, दूसरे काम और मेहमान थे। फलो और सब्जियों को नमक पानी या सिरके मे प्रिजर्व करने का काम

भी उन्ही के जिम्मे था।
पता नही कब ये पूरा परिवार जग कर अपने अपने कामों मे जुट जाता था.फिर इन्हे एक मिनट की भी फुर्सत न होती थी।उलरिके भी अपने पति की तरह पैंट.फ्लानेल की कमीज और पम्पशू ही पहनती थी।थोमास के पिता की भी यही पोशाक होती थी।उसकी माँ और दादी एप्रन बाँधे रहती थीं।शाम का खाना ये सब एक साथ सात बजे खाते थे।शाम के खाने से पहले ही औरतें अपना एप्रन खोलती थी और मर्द अपने पम्पशू।खाने के बाद ये अपने ड्राईन्गरूम मे इकट्ठे बैठ कर टेलीविजन देखते थे।दस बजे के बाद इस परिवार मे सन्नाटा छा जाता था।
दूसरा परिवार जो मेरे साथ ठहरा था.उनसे मेरी बस नाश्ते पर ही मुलाकात होती थी।नाश्ते के बाद ये अपनी सायकल लेकर सैर के लिए निकल जाते थे।फिर गई दोपहर मे ये वापस आते थे।थोड़ा बहुत आराम करके फिर ये अपनी गाड़ी लेकर आसपास के कस्बों की ओर निकल जाते थे।ये शहरी थे।बगैर शहर के इनका दम घूँटता था।
एक बार पता नही क्यों और कैसे मुझे थोमास के पड़ोसी परिवार का दोपहर के खाने पर निमंत्रण मिला।पता नही किस वजह से इन दो परिवारों मे वर्षो से कोई खटपट चल रही थी.पर मुझे वहाँ जाने से किसी ने नही रोका।मै वहाँ गया।मै इनकी भी गृहस्थी अन्दर तक झाँक आया।इनका भी अपना निजी मकान था.अपनी बागवानी थी.अपना लॉन था।गाड़ी थी.ट्रेक्टर था.टेलीविजन और टेलीफोन था.पर इनके पास थोमास जितनी जमीनें और गायें न थी।इसके अलावे इस परिवार मे एक बेहद खूबसूरत लड़की थी जो दिन भर एक एप्रन बाँधे घर और फार्म के हर कामों मे अपने माँ बाप का हाँथ बँटाती थी।उसका नाम माग्रेट था।बड़ी तबीयत से भगवान ने उसकी रूप काया रची थी.जिसे वो अपनी लम्बी फ्रॉक या एप्रन से नही छुपा पाती थी।
एक और खासियत इस परिवार मे थी।माग्रेट और उसकी माँ टेबल पर से हटे नही कि उसके पिता अपनी और मेरी ग्लास कौर्न से लबालब भर के फिर से बोतल अपने दोनो पैरों के बीच छुपा लेते थे और एक चुटकुला सुनाने लग पड़ते थे।उनके सारे चुटकुले कमर की बेल्ट के नीचे के ही होते थे.पर मै उनके साथ ठहाके लगा कर लोट पोट हो जाता था।न तो उन्हे अपने उम्र की कोई परवाह होती थी और न मेरे उम्र की ही।
जब शाम को थोमास और उलरिके मुझे लेने आए तो मै नशे मे धुत्त बैठा था।इस परिवार में मै बस एक बार ही जा सका।
मेरी छुट्टियाँ खत्म होने को आईं।स्टाईना मे मुझे आए तेरह दिन हो चले थे।दूसरे दिन सुबह फ्रान्कफूर्ट से मेरी ट्रेन ठीक ग्यारह बज कर दस मिनट पर थी।शाम के खाने पर मै चार सौ मार्क बिना किसी से कुछ पूछे थोमास के सामने रखे एक ग्लास के नीचे दबाते हुए बस इतना ही कहाःइस विषय पर मै किसी से उलझना नही चाहता।
पैसे देख कर पूरा परिवार एक साथ चौंक पड़ा।इन तेरह दिनो मे मुझसे जो भी हो सका था.मैने इस परिवार के लिए किया था।एक तरह से मै इस परिवार का सदस्य बन चला था।दरअसल स्टाईना मे कुछ घन्टों के बाद ही मै इनका मेहमान नही था।
दूसरे दिन मै बर्लिन वापस आ गया।रास्ते भर मुझे स्टाईना गाँव के तीन आलिंगन बेहद व्यस्त रखे।थोमास के दादी के.उलरिके के और माग्रेट के पिता के।एक और बात मेरा मन आलोड़ित करती रहीःमै गाड़ी में बैठ चुका था कि अचानक माग्रेट भागती हुई आई और मेरे हाँथ मे एक केक पकड़ा कर चली गई.जिसे उसने स्वयम मेरे लिए बनाया था।
स्टाईना मे बिताये तेरह दिन मुझे बर्लिन मे महीनो व्यस्त रखे।समय के साथ वहाँ की तमाम दूसरी बातें तो धूँधली पड़ती चली गई पर माग्रेट नही।जब तब वो एक अप्सरा की तरह सज धज कर मेरे आँखों के सामने आ कर खड़ी हो जाती थी.कभीं एप्रन मे.तो कभीं घाघरे मे.कभीं साड़ी मे तो कभीं किसी फ्रॉक मे।वो कम कपड़ो मे मेरे पास कभीं न आई.वरना सौन्दर्य के इस सत्य को देखने के बाद मुझे भी अन्धा होना ही होना था।
उन दिनो पता नहीं क्यों मुझे बर्लिन मे मारगरेटे नाम के फूल बड़े अच्छे लगते थे।शायद ही ऐसा कोई रंग रहा होगा.जो इनके पास न रहा हो।हरी हरी रंग की पत्तियों वाला ये पौधा देखते ही देखते फूलों से लद जाता था.जो दो तीन दिन अपनी सुन्दरता बिखेर कर अपनी डालों पर सूख जाते थे.फिर भी ये पौधा फूलों से लदा रहता था।एक ही डाल पर.जिस पर एक फूल सूखने को होता था.वहीं दस कलियाँ अपने खिलने का इन्तजार करती रहती थीं।
इस मारगरेटे की सुन्दरता और उसकी सत्ता को बस बर्लिन की ठंढ ही अपनी एक तर्जनी दिखा कर इशारे से समझा कर ये कह जाती थीःबहुत हो चुका।अब अपना सब कुछ बटोरो और दफा होवो।मुझे अपने पंजे फैलाने है।मारगरेटे हल्की सी शीत भी नही झेल पाती थी।
बर्लिन मे स्टाईना गाँव जैसी एक शान्ति अहर्निश हर दिशा मे व्याप्त हो जाती थी।
इन पिछले दस वर्षो मे मै सिर्फ दो बार स्टाईना गया.पर थोमास और उलरिके मेरे पास कई बार आये।
बर्लिन मे वो एक दिन से ज्यादे कभीं नही ठहरते हैं।दिन भर वो पता नही कौन कौन सी खरीददारियाँ करते रहते हैं।जब बर्लिन की सारी दुकानें बन्द हो जाती हैं.तभी वो वापस घर आते हैं।मै खाना सजाये उनका इन्तजार करता रहता हूँ।
जब ये तीसरी बार बर्लिन आए थे.तब खाने की मेज पर फिर से उलरिके ने अपना चिर परिचित सवालःस्टाईना फिर कब आओगेः दुहराया और मुझे ताने देते हुए कहने लगीःतुम शायद अब स्टाईना कभीं नही आओगे।तुम्हारी माग्रेट बर्लिन जो आ चुकी है।मेरे पास तुम्हारा पता माँगने आई थी।थोमास के मना करने के बावजूद मैने उसे तुम्हारा पता दे दिया।कब कर रहे हो उससे शादी!उससे हमे क्यों नही मिलवाते!कहाँ छुपा रखे हो उसको!
मुझे चौंकना पड़ाःक्या कहा तुमने!माग्रेट बर्लिन आ चुकी है!पर कब!
ःचार महीने से ऊपर होने को आये।तुमसे नही मिली!
ःऊँहू!पर तुमने मुझे टेलीफोन पर ये क्यों नही बताया!
ःमै उतनी उत्सुक या जिज्ञासू नही हूँ.जितना तुमने मुझे समझ रखा है।तुम दोनो के बीच मै अपनी टाँगे क्यों भिड़ाती!
ःक्या वो वाकई बर्लिन मे है!मेरे पास तो उसका एक टेलीफोन तक नही आया।
ःमेरा भरोसा नही है.तो थोमास से पूछ लो।
जब मै थोमास की तरफ देखा.तो उसने भी अपनी हामी भर दी।
अब मेरा दिमाग चकराया।बर्लिन की भूल भूलैया मे एक छोटे से गाँव की लड़की आखिर क्या ढूँढने आई है!यहाँ की चकाचौंधो मे तो वो अब तक अंधी हो गई होगी।यहाँ के शहरी भेंड़िये तो अब तक उसका कीमा बना डाले होंगे।निश्छलता का बर्लिन मे क्या काम!!एक अनहोनी

आशंका मुझे पलक झपकते सिहरा गईउसकी विधि मे ईश्वर को एक सज्जन राजकुमार लिखना था.बर्लिन नही।
थोमास और उलरिके ये भॉप चुके थे कि माग्रेट नाम मेरे लिए बेमानी नही है और ये नाम मेरे लिए किसी मजाक का विषय भी नही है।
ःबर्लिन मे उसका कोई रिश्तेदार रहता है क्या!
ःजहॉ तक हमारी जानकारी है।नहीं।थोमास बोला
ःफिर वो बर्लिन क्यों आई!इस गन्दे शहर मे आने की वो हिम्मत कैसे कर सकी!
ःहम तो यही सोचे बैठे थे कि वो तुमसे मिलने आई होगी।स्टाईना को तो वो जैसे भूल ही गई।एक बार भी अपने मॉ बाप से मिलने न आई।
एकबारगी वातावरण बेहद गम्भीर हो चला था।मुझसे एक चम्मच भी नही खाया जा सका।
दूसरे दिन उलरिके का फोन आया और उसने मुझे माग्रेट की एक सहेली का पता लिखवाया और एक फोन नम्बर भी दिया।मैने फौरन नम्बर मिलाया.पर ये फोन काटा जा चुका था।उसी दिन मै उलरिके के दिए पते पर गया.जो बर्लिन के कृवायेत्सवेर्ग इलाके मे था।ये इलाका तुर्कियों का गढ माना जाता है।इस इलाके मे जर्मन रहना ही नही चाहते।शायद ही ऐसा कोई काला धन्धा हो.जो इस इलाके मे न होता हो।गन्ध मचा कर रखे हैं.यहॉ अपने विदेशी भाई।पता ढूँढने मे मुझे कोई परेशानी नही हुई।जिस फ्राऊ स्मिथ को मै ढूँढ रहा था.वो एक तीनमंजिले मकान की सीढियों पर पोछा लगाती मिल गई।जब उसे नमस्ते कर के मैने माग्रेट के बारे मे पूछा तो वो भभक पड़ीःमाग्रेट से तुम्हे कुछ नही मिलना है।वो एक तुर्की से शादी कर के अपनी किस्मत पर रो रही है।अपनी बहन बेटियों को तो तुमलोग बूरके मे रखते हो और दूसरों की बहन बेटियों से खिलवाड़ करते हो।
दिन के यही कोई दस बज रहे होंगे.पर फ्राऊ स्मिथ के मुँह से दारू की ऐसी बास आ रही थी कि वहॉ एक पल भी ठहरना मुझे दूभर लग रहा था।अब किसी तरह से मुझे माग्रेट का पता तो मालूम करना ही था।मैने गिड़गिड़ाते हुए उससे कहाःमुझे माग्रेट से कुछ नही लेना देना है।मै स्टाई ना मे उसके मॉ बाप से मिल चुका हूँ।मुझे बस उसका हालचाल पूछना है।
मुँह फेरे ही उसने बतायाःप्रिन्सेनस्ट्रासे सत्ताईस।आल्कान या बाल्कान ऐसा ही कोई नाम वहॉ तुम्हे लिखा मिल जायेगा।
चलने से पहले मै इस शराबन को डपटाःतुम माग्रेट की सहेली हो.बर्लिन मे रहती हो.तुमने उसे तुर्कियों से क्यों नही बचाया!फिर तुम बचाती भी कैसे!अपने दारू से तुम्हे फुर्सत ही कब मिलती होगी!माग्रेट की एवज मे कितने पैसे ऐंठे थे तुमने तुर्कियों से!
तमाम संशयों से मेरा मन घिर चला था।माग्रेट खुशहाल मिलेगी.इसकी मुझे रत्ती भर भी आशा न थी।जिस सहेली का उसे संरक्षण मिलना था.उसको तो मै देख ही आया था।फिर भी हिम्मत बॉध के मै मेट्रो मे जा बैठा।जिस मेट्रो स्टेशन पर मुझे उतरना था.उसका नाम भी प्रिन्सेनस्ट्रासे ही था।नम्बर सत्ताईस पर एक सोलह मंजिली फ्लैट थी।इन्ट्रेन्स पर ही नामों की तख्तियॉ थी।सातवीं मंजिल पर बाकई एक आल्कान नाम मुझे मिल गया।कौल बेल दबाते ही नीचे का दरवाजा खुल गया।मै लिफ्ट लेकर सातवीं मंजिल पर जा पहुँचा।अपने अपार्टमेन्ट का आधा दरवाजा भेड़े एक तुर्की खड़ा था।दुबला पतला.ढीले ढाले पतलून और सिल्क के सफेद कमीज मे ऊपर के दो तीन बटन खोले हुए।ऐसे ही तीन चार और नमूने सामने वाले कमरे मे एक शीशे की गोलदार मेज के चारो ओर बैठे कोई गोटियों वाला खेल खेल रहे थे।सभी की नजरे मुझी पर आ टिकी थी।
ःयहॉ माग्रेट नाम की कोई लड़की रहती है!
ःक्यों!
ःये मेरे सवाल का जवाब तो नही है।
ःतुम्हे उससे क्या लेना है!वो मेरी बीबी है।
ःमुझे उससे कुछ नही लेना है।मै तो बस उससे मिलने आया था।
ःतुम उसके रिश्तेदार हो!
ःनही!पर मै उसके मॉ बाप को जानता हूँ।
एक पल के लिए माग्रेट अपने रसोई के दरवाजे पर आई.पर तब तक उसका पति मुझे धक्के मार कर दरवाजा बन्द कर चुका था।कमरे से उसके और उसके दोस्तों के हॅसने की आवाज बाहर तक आ रही थी।
दुबारा दरवाजा खटखटाना मैने उचित न समझा।अपने मुँह तुड़वाने का शौक मुझे कभीं से न था।मै वापस घर चला आया।
बिना कुछ जाने ये कहना बड़ा मुश्किल था कि माग्रेट खुश है या नही।अगर वो खुश है.तो खुश है।अगर नही है.तो वो अपने को उबार सकती है।वो जर्मनी मे रह रही है.जहॉ कानूनन उसे हर तरह की सहायता मिल सकती है।
माग्रेट को मैने उसके हाल और भाग्य पर छोड़ दिया।इस विषय को मै और लम्बा खींचना नही चाहता था।
समय अपनी धूरी पर नाचता रहा।थोमास और उलरिके बर्लिन आते रहे।उलरिके अब एक बच्चे की मॉ थी.पर अभीं भी अपने पति के साथ कन्धे से कन्धा लगाए फार्म के कामों मे जुटी रहती थी।
जब तब उलरिके ही माग्रेट का जिक्र करती थी।मुझे चुप ही रहना पड़ जाता था।एक धुली धुलाई सुन्दरता पर चोर उच्चकों.बदनियतों और दुश्चरित्रों का सबसे पहले हमला क्यों होता है!ये मेरे लिए वाकई एक पहेली ही थी और आज तक है।मैने एक पत्र माग्रेट के मॉ बाप के नाम पर भी डाला और उन्हे माग्रेट का पता लिखवा कर उन्हे शीघ्र माग्रेट से सम्पर्क करने को कहा.पर मुझे उनकी कोई प्रतिक्रिया सुनने को नही मिली।
सुबह हो चली थी.पर माग्रेट अभीं भी सोये जा रही थी।मै बैठा भगवान से बस यही मनाये जा रहा था कि वो सोये ही रहे.जब तक कि उसके मॉ बाप नही आ जाते।पता नही जगने के बाद वो कौन सा बवाल मचाए।अनुमानतः उसके मॉ बाप को एक दो बजे तक तो बर्लिन आ ही जाना चाहिये था।घड़ी की सूईयॉ तक जैसे जाम हो चली थीं।सरकने का नाम ही न ले रही थीं।
दस बजे सुबह अचानक माग्रेट करवट बदली और एक शेरनी की तरह झपट कर सोफे पर बैठ गई और फटी फटी ऑखों से मुझे देखने लगी।डर से तो मेरी रीढ की हडी तक जमने को आई।मेरे पॉव कॉपने लगे।अब मै उसके मन के शैतान को तो जानने से रहा।उसकी पहली प्रतिक्रिया पर ही सारी बातों का दारोमदार था।
मुझे अपने सामने देख कर वो अपनी फ्रॉक ठीक करने लगी।दो चार मिनटों का सन्नाटा.जो मेरी जान लेने पर तुला हुआ था.टूटाःतुम यहॉ रहते हो प्रमोद!

इशारे से ही मैने हॉ कहा।
ःमेरे सर मे बड़ा दर्द हो रहा है।तुम एक कप कॉफी मेरे लिए बना सकते हो!
ःहॉ हॉ क्यों नही!एक कप क्यों! मै पूरी थर्मस बना के लाता हूँ।मेरी तो जैसे जान मे जान आ गई थी।
कम्वल से अपने को ढँके वो कॉफी के घूँट पर घूँट लगाए जा रही थी।एकाध बार उसने मेरा हाल चाल भी पूछा।उसकी भाषा भी संयत हो चली थीःफिर कभीं स्टाईना गये क्या!
ःप्रिन्सेनस्ट्रासे पर विना मुझसे मिले वापस क्यों चले गए!
ःमुझे अपने घर क्यों ले आए!मुझे छोड़ दिये होते मरने के लिए।फिर वो एक ऊँचे कन्ठ मे रोने लग पड़ी।
अब मुझसे नही रहा गया।मै उठ कर उसकी बॉह थाम ली और बड़े प्यार से उससे कहाःमै तुम्हारे लिए नाश्ता बनाने जा रहा हूँ।तुम्हे नहाना वहाना हो तो नहा लो।मेरे कपड़े तो तुम्हे नही आ पाएँगे.पर मेरे पास एक जोगिंग सूट है।वो शायद तुम्हारे माप की हो।एक नया टुथब्रश भी मेरे पास है।वो भी मै रख आता हूँ।कोई एप्रन मेरे पास नही है.वरना तुम्हे देता।एप्रन मे तुम किसी अप्सरा से कम नही लगती हो।
माग्रेट अपना सब कुछ खो चुकी थी.पर वो माग्रेट ही थी।वो अपनी एक मुस्कान से ये सावित भी कर दी।उसे एक पल भी अपने ग्यारह वर्ष पीछे लौटने मे न लगा।
ःऔर मेरे अपने कपड़े प्रमोद!
ःमै तुम्हे एक प्लास्टिक का थैला देता हूँ।उन्ही मे वॉध देना।साथ चल कर उसे कूड़े मे फेक आएँगे।पिछली बार तुमने नहाया कव था!
ःपता नही.कहके वो वेहद उदास हो चली।
अपने इस सवाल पर मुझे अपने आप पर बड़ा गुस्सा आया।बड़े प्यार से मैने उसका कन्धा सहलाते हुए उससे अपने कहे की माफी मॉगी।
ःठीक है।अब तुम मेरी ओर न देखना।मै उठने जा रही हूँ।
मै रसोई मे जा घूसा।माग्रेट नहाने चली गई।बाथरूम मे मै पहले से ही एक प्लास्टिक का थैला उसके गन्दे वदवूदार कपड़ों के लिए लटका आया था।
खाना बनाने के दौरान रह रह कर मेरे ऑखों के सामने माग्रेट की ग्यारह वर्षो पूर्व की सुन्दरता तिरती रही.जिसका शायद ही एक अल्पांश उसके पास बचा था।अपने सुन्दर वालों को भी वो उटपटांग ढंग से काट कर लाल रंग से रंगे बैठी थी।मै चून चून कर तुर्कियों को गाली दिये जा रहा था।
माग्रेट नहाये जा रही थी।इस बीच मै ड्राईन्गरूम साफ सूफ करके उसकी सारी खिड़कियॉ भी खोल आया था।
आधे घन्टे से ऊपर हो चले थे और अभी भी माग्रेट नहाये चली जा रही थी।जब वो नहा धोकर मेरे दिये जोगिन्ग सूट पहने वाहर आई.तब कल मिले माग्रेट और अव के माग्रेट मे जमीन और आसमान का अन्तर था।स्टाईना की हवा पानी और वहॉ के खाने शायद फिर से उसे उसकी उम्र के कुछ गुजरे वर्ष वापस दे देंगे.ये मेरा विश्वास था।
खाने की मेज पर मैने उससे कोई सवाल न किये।मुझे पता था कि उसके पास उनका कोई जवाव नही होगा।वो अपनी नज़रे झुकाये चुपचाप खाती रही।नहाने धोने के बाद वो एक हद तक स्थिर भी हो चली थी।
अकस्मात उसके प्रश्न से कमरे का सन्नाटा टूटाःएक कारण से शायद मुझे कई बार बर्लिन आना पड़ जाएगा।मै तुम्हारे संग ठहर सकती हूँ!
ःहॉ!क्यों नही।
ःतुम मुझसे नाराज तो नही हो!
ःविल्कुल नही।तुमसे नाराज होने की मेरे पास कौन सी वजह हो सकती है!
ःकल तुम्हे मैने बहुत ज्यादे परेशान तो नही किया!
ःछोड़ो इन वातों को।एक बात बताओ!बर्लिन मे तुम्हे बार बार क्यों आना पड़ जाएगा!
ःयूगेन्ट आम्ट ने मेरी तीन वेटियों को मुझसे अलग कर रखा है।मुझे उन्हे वापस पाना है।
ःक्या उम्र है उनकी!
ःबड़ी नौ वर्ष की है।मॅझली सात वर्ष की और छोटी तीन वर्ष की।
ःये यूगेन्ट आम्ट का लफड़ा कैसे हुआ!
ःउनकी नंगी तसवीरें एक फूल वेचने वाले की दुकान मे वरामद की गई थी।
ःऔर ये तसवीरें ली किसने थी!
ःपता नही।तीन बार मैने शादियॉ की।तीन बार मेरा तलाक हुआ.पर मै अपनी वेटियों को चाह कर भी एक परिवार जैसी चीज न दे पाई।क्या क्या सोच कर मै बर्लिन आई थी!और क्या क्या लिए मै स्टाईना वापस जा रही हूँ!
अव उससे खाया न जा सका।अपनी प्लेट हल्के से परे करके वो रोने लग पड़ी।
मुझे तत्काल उठ कर उससे कहना पड़ाःतुम रोना मत कर दो।ये मुझे वड़ा उदास कर देता है।
जव मुझे उलरिके से ये पता चला कि माग्रेट बर्लिन आ चुकी है और फ्राऊ स्मिथ से उसकी शादी का.तव ही.मै ये जान चुका था कि अव उसके जीवन मे सिर्फ तवाहियों की बाढ आने वाली है।यहॉ के कुछ समुदायों मे अगर कोई लड़की गलती से भी आ गई.तो उसका नाश निश्चित है।डरा धमका कर उसके जरिये अपने वीजे ठीक करवाये जाते है और जव तक सुन्दरता और जवानी उसका साथ नही छोड़ देती.उसे तव तक रौंदा जाता है।अन्त मे या तो वो किसी यौनिक बीमारी की शिकार हो जाती है या फिर ड्रग्स वगैरह लेना शुरू कर देती है।इस तरह की लड़कियों को बर्लिन मे असमाजिक कहा जाता है।
जव मैने माग्रेट से इन दोनो वातों के वारे मे पूछा तो कहने लगी कि बीमारियों का उसे कोई पता नही है.पर अगर उसके पास पैसे होते तो ड्रग्स वगैरह उससे ज्यादे दूर न था।
ःपुलिस मे रिपोर्ट क्यों नही लिखवाया!
ःवेटियों के डर से।वेटियों की ही वजह से मैने पापा और मम्मी को भी बर्लिन आने से मना कर रखा था।

जिस मार्ग्रेट से मै स्टाईना मे मिला था और जो मार्ग्रेट मेरे सामने बैठी थी. इनके बीच सुन्दरता और उम्र का एक फासला तो आ गया था. पर चित्रवत एक की ऑखों मे उमड़ते घुमड़ते सपने थे और दूसरे की ऑखो मे उन सपनों की लाशें दफन थी।

मार्ग्रेट के मॉ बाप मेरे पास न रूके।अपनी इकलौती बेटी को समेट कर स्टाईना वापस चले गए।बर्लिन मे उनसे एक शब्द तक न बोला गया।उनका हर शब्द फूटने से पहले ही ऑसुओं की झड़ियों मे खो जाता था।

मार्ग्रेट को उसके माता पिता अपनी बॉहों मे थामे अपनी गाड़ी की ओर बढे जा रहे थे।बड़े सम्मान के साथ मार्ग्रेट के पिता ने अपनी पत्नी के लिए गाड़ी का पिछला दरवाजा खोला और मार्ग्रेट के लिए आगे अपनी बगल का।

इस विदाई पर मै सबसे गले लग कर मिला।उसके माता पिता से धन्यवाद तक न कहा जा सका. पर उनकी ऑखों मे मेरे लिए जो प्रेम सिमट आया था. वो मुझसे छुपा न था।मै जब मार्ग्रेट से गले मिला. तब वो गले मिलने के बाद मिनटों अपना सर मेरे कन्धों पर धरे रोती रही।मैने उसे अपने से अलग नही किया।जब वो थोड़ी समान्य हुई. तब मुझे पास के ही एक नीची सी दीवार की तरफ इशारा करके पूछीःतुम मेरे साथ उस दीवार पर थोड़ी देर के लिए बैठ सकते हो!

ःहॉ क्यों नही!तुम चल कर बैठो. मै अभी आता हूँ।

जब मार्ग्रेट दीवार की तरफ बढी तो मै उसके मॉ बाप के कानों मे फूसफूसा आया कि वो स्टाईना पहुँचते ही समय निकाल कर मार्ग्रेट की किसी अच्छे क्लिनिक मे पूरी जॉच अवश्य करवायें।

ये कहके मै मार्ग्रेट की ओर बढा और उसके बगल मे उसका एक हॉथ थाम कर बैठ गया और बड़े प्यार से उससे पूछाःतुम्हे मुझसे कुछ कहना है!

ःहॉ!

ःक्या!

ःतुम सिर्फ एक बार मुझसे मिले. फिर भी मुझे अपने घर ले आये. अपने साथ रखे।इसके लिए तुम्हे हजारों बार अपना धन्यवाद कहती हूँ।अब मै स्टाईना मे बिल्कुल नये सिरे से अपना जीवन शुरू करूँगी।अपनी बेटियॉ वापस लूँगी।कभीं स्टाईना हमारे मेहमान बन कर आना।तुम्हारी बहुत सेवा करूँगी।

अगर एक तरह से देखा जाय. तो मैने मार्ग्रेट के लिए कुछ भी नही किया था. फिर भी वो ये महसूस कर चुकी थी कि मै उसके लिए कभी गैर नही था।ये मेरे लिए एक बेहद सुखद अनुभूति थी।जब मार्ग्रेट ने मुझसे ये कहाःतुम अपना ख्याल रखना प्रमोद. तब मैने मुस्कराना ही चाहा था पर एक अजीब सा तनाव मेरे गले मे आ ॲटका था।

मार्ग्रेट स्टाईना वापस चली गई. पर मेरे मन मे आये दिन एक कामना इन शब्दों मे मुखर हो जाती थीःहे भगवान! तुम मार्ग्रेट को उसकी तीनों बेटियॉ वापस कर दो।बड़ा तप सह के उसने अपनी तीनो बेटियॉ पाई है।दो तुर्कों और एक अरबी को उसने जर्मनी मे साधिकार रहना सौंपा।तीन बार शादियॉ की. तीन बार तलाक झेला।इन जाहिलों से अपना बदन रौंदवाया।मै नही समझता कि इस बात के पीछे उसका कोई भी दोष रहा होगा कि उसकी बेटियों की नंगी तसवीरें किसी एक फूल बेचने वाले के दुकान पर बरामद की गई थीं।अगर तुम्हे सजा ही देनी है. तो तुम इन तीन कमीनों को दो. जिन्होने मार्ग्रेट को प्रेम के हर मापदन्डो के बाहर जन्गाली जानवरों की तरह रौंदा।तुम कब तक उन्हे सजा देते रहोगे. जो तुम पर अपनी श्रद्धा रखते है!तुम्हे किसने ये अधिकार दे रखा है कि तुम ठंढ की शक्ल मे अपनी एक उँगली उठा कर तमाम मारगरेटों को ये कह के चले जाते होःअब तुम दफा होवो।मुझे अपने पंजे फैलाने हैं।तुम्हारा सौन्दर्य से ये कैसा विरोध है!

एक महीना भी नही गुजरा था कि मार्ग्रेट दुबारा बर्लिन आई और एक दिन मेरे साथ ही रही।वो स्टाईना से ही बर्लिन के एक वकील का पता लगा कर आई थी।उसकी वकील एक महिला थी।उसका नाम मार्स था।उसके पति भी वकील थे।ये दोनो यहूदी थे।इन दोनो की प्रैक्टिशें विलान्डस्ट्रासे पर एक मकान मे थी. पर अलग अलग मंजिलों पर।

इस मार्स ने मार्ग्रेट को अच्छी तरह सुना और बर्लिन के यूगेन्ट आम्ट के नाम उसी दिन एक बम की तरह विस्फोटक पत्र भेजा।मार्ग्रेट ने उसे अपना पावर ऑफ एटोर्नी दे रखा था।तीन महीने मार्स और यूगेन्ट आम्ट के बीच विस्फोटक पत्रों का आदान प्रदान चलता रहा।यूगेन्ट आम्ट मार्ग्रेट को किसी भी हालत मे उसकी बेटियॉ देने को तैयार नही था और मार्स का ये कहना था कि सिर्फ मार्ग्रेट ही अपनी बेटियों को हर तरह का प्यार और हर तरह की सुरक्षा दे सकती है।यूगेन्ट आम्ट अपनी जिद़ पर अड़ा था. मार्स अपनी जिद़ पर।अब मार्स के पास धैर्य न रहा।उसने यूगेन्ट आम्ट के खिलाफ अदालत मे केस दर्ज कर दिया और दो सप्ताह के अन्दर उसे बर्लिन के मोआबीट कोर्ट मे तारीख भी मिल गई।

ये सन सन्तानवे की बाते हैंःसात जून सुबह नौ बजे मार्ग्रेट की बेटियों के केस की सुनवाई होनी थी।छ जून की शाम मार्ग्रेट अपने मॉ बाप के संग बर्लिन आ चुकी थी।ये सब स्टाईना से सीधे मेरे पास आये थे और मेरे मेहमान थे।हममे से किसी से भी शाम का खाना छूआ तक नही जा सका।हममे से किसी को ये पता नही था कि कल आने वाला सूर्योदय किस ताप से उगने वाला है!मै तो पूरी रात सो ही नही पाया।रात भर सोफे पर बैठा बस यही दुहराता रहा कि हे भगवान!बस एक बार और मुझे अपनी महत्ता दिखा दो।मार्ग्रेट के जीवन से न खेलो।

दूसरे दिन सुबह नहा धोकर हम ठीक सवा आठ बजे मोआबीट कोर्ट पहुँच चुके थे।तीसरी मंजिल के कमरा नम्बर तीन सौ सतरह मे मार्ग्रेट के बेटियों की सुनवाई होनी थी।बरामदे मे कई बैन्चे लगी हुई थी।एक बैन्च पर हम चारो जा बैठे।बरामदा अभीं भी खाली था।आधे घन्टे के अन्दर ये बरामदा तुर्कियों और अरबियों से खचाखच भर चला था।पता नही ये अपनी भाषा मे क्या क्या कहके आगे बढ जाते थे।मार्ग्रेट अपनी दोनो ऑखे बन्द किये अपनी मॉ के सीने पर अपना सर रखे निष्प्राण बैठी थी।ठीक पौने नौ बजे मार्ग्रेट की तीनों बेटियॉ छ पुलिस ऑफिसरों की सुरक्षा मे आई. पर उन्हे किसी एक दूसरे दरवाजे से कमरा नम्बर तीन सौ सतरह मे पहुँचाया गया।नौ बजने मे पॉच मिनट बाकी था।कमरा नम्बर तीन सौ सतरह खोला जा चुका था।बरामदे मे खड़े सारे लोग भरभरा कर इस कमरे मे जा घूसे।इनमे मार्ग्रेट के पतियों को मै कहॉ से पहचानता!तभी मार्स एक काला चोंगा पहने न जाने कहॉ से आकर हमारे सामने खड़ी हो गई!मै उसे पहली बार देख रहा था।उसकी कद छ फीट के आसपास तो रही ही होगी।घूटने तक लटका उसका चोंगा. पीछे किये रीबन से बॅधे बाल. चोगें से बाहर झॉकती एक काले रंग की लम्बी स्कर्ट. सफेद ब्लाउज. दॉये हॉथ मे काले चमड़े की एक फाईल. बॉई कलाई मे बॅधी सोने की एक सुन्दर सी रिस्ट वाच. एक दिव्य चेहरा और एक भारी भरकम आवाज।मार्ग्रेट के अलावे वो हम सबसे अपना हॉथ मिला कर हमे कमरे की ओर बढने का इशारा की।मार्ग्रेट की मॉ उसे सहारा दे कर उठीं।हम चारो आकर इस कमरे की पहली पंक्ति मे बैठे ही थे कि इस कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया गया।हमारे पीछे बैठे तुर्की तब चुप हुये. जब पिछले दरवाजे से तीन महिला जजें इस कमरे मे आकर अपनी सीटों पर बैठीं।अब इस कमरे मे एक धुप्प सन्नाटा था।इन जजों के मंच के सामने एक बड़ी सी मेज लगी

हुई थी जिसके आमने सामने दो कुर्सियॉ लगी हुई थीं।एक तरफ एक कम उम्र का पब्लिक प्रोसिक्यूटर और दूसरी तरफ मार्स बैठी अपनी फाईलों मे व्यस्त थीं।एक तीसरे रास्ते से मार्ग्रेट की बेटियॉ पुलिस की सुरक्षा मे एक कठघरें मे लाई गई।सिर्फ एक बार मार्ग्रेट ने अपना सर उठा कर उन्हे देखा।उसकी बेटियॉ तो जैसे पागल ही हो गई।मामा मामा और उनके समवेत रूदन ने इस कमरे मे एक ऐसा भूचाल लाया कि मै बता नही सकता।मार्ग्रेट फिर अपनी मॉ के सीने से जा लगी।एक जज के इशारे पर उसकी लड़कियों को जब ऑफिसर्स इस कमरे से लगे एक दूसरे कमरे मे ले जाने लगे. तब इन तीनो की बॉहे मार्ग्रेट की ओर उठी हुई थी।उनका वश चला होता तो वो कठघरा लॉघ कर कब की अपनी मॉ के सीने मे समा गई होंती।इतना हृदय विदारक दृश्य मै अपने जीवन में पहली बार देख रहा था।जजों को भी ये पता चल चुका था कि मार्ग्रेट की उपस्थिति मे उसकी लड़कियों से कुछ भी नही पूछा जा सकता।

सवा नौ बजे के आसपास ये सरकारी वकील मार्ग्रेट पर लांक्षनायें लगाने उठाःउसके अनुसार मार्ग्रेट एक रंडी थी. निम्फोमान थी. उसने अपने तीनों पतियों को धोखा दिया था. अपने पतियों से मिले पैसों से वो अपने मेहमानों को अपनी सेवायें देती थी. बच्चे भूख से बिलबिलाते रहते थे और वो शराब मे धुत्त अपने यारों की बॉहो मे लेटी रहती थी।तंगी मे वो अपनी बेटियों की नंगी तसवीरें खींच कर उन्हे बेचा भी करती थी।इस तरह की मतिभ्रम और शराबी औरतों के हॉथों मे जर्मनी का भविष्य नही सौंपा जा सकता है।अपनी पीठ पीछे मै तुर्कियों का कहा ओलदो ओलदो सुने जा रहा था. जिसका मतलब मुझे आज तक पता नही है और मै इसे आज तक नही जानना चाहता।

एक बार तो मेरा मन किया कि उठ कर इस वकील का गला ही दबा दूॅ भले ही मुझे फॉसी ही क्यों न हो जाये।

इस सरकारी वकील ने गवाह के रूप मे मार्ग्रेट के तीनों पतियों के अलावे उनके तमाम सम्बन्धियों और पड़ोसियों को कठघरे मे बुलाया।उस फूल बेचने वाले को भी बुलाया गया।इनकी मनगढन्त कहानियों की मार्स ने धज्जियॉ उड़ा कर रख दीं।उसकी धमकी बड़ी कारगर होती थीःइसे नही भूलना कि जो कुछ भी तुम कह रहे हो. एक शपथ के तहत कह रहे हो।तुम्हारा एक गलत शब्द तुम्हे सलाखों के पीछे ले जा सकता है।गवाहों के तो पसीने छूट रहे थे।

मेरा मन कह रहा था कि मार्स इस केस को जीतने जा रही है. फिर भी मै पूरी तरह आश्वस्त नही था।मैने सुन रखा था कि जर्मनी मे सरकारी जजेस और पब्लिक प्रोसिक्यूटर्स एक दूसरे को अपनी कलिग की तरह लेते है और बचाव के अधिवक्ता को एक बाहरी और गैर की तरह।बस मुझे व्यक्तिगत एक बात का सम्बल था कि मार्ग्रेट की वकील और वहॉ बैठी तीनो जजें महिलायें थी।कम से कम इन्हे ये तो पता होगा ही कि एक मॉ और यूगेन्ट आम्ट मे क्या और कितना अन्तर होता है!

मार्स न सिर्फ मार्ग्रेट को उसकी बेटियॉ वापस दिलवाने की फरियाद कर रही थी. बल्कि मार्ग्रेट को उसकी बेटियों के संग पुलिस की सुरक्षा मे ससम्मान स्टाईना भिजवाना चाह रही थी।इतना ही नही वो इस पब्लिक प्रोसिक्यूटर का सस्पेंशन भी चाह रही थी और इस अदालत को जर्मनी की सबसे ऊॅची अदालत की धमकियॉ भी दिये जा रही थी।इतना ही नही. वो मार्ग्रेट के तीनो पतियों को मिले वीजा स्टेटस के रद्द करने की मॉग भी किये जा रही थी।तुर्की और अरबी लॉबी को तो जैसे सॉप ही सूॅघ गया था।

तीसरे दिन इस केस का फैसला मार्ग्रेट के हक मे सुनाया गया।उसे उसकी तीनो बेटियॉ वापस मिल गई थीं।इस फैसले के बाद ही मार्ग्रेट को पुलिस सुरक्षा मे ले लिया गया।उसके मॉ बाप के अलावे उससे कोई नही मिल सकता था।इसी शाम पुलिस की सुरक्षा मे उसे अपनी बेटियों के साथ स्टाईना भेजा गया।मै ढंग से न तो उससे विदा ले पाया और न ही उसकी बेटियों से. पर मै कोर्ट का परिसर तब तक नही छोड़ा. जब तक उसकी गाड़ी मेरी ऑखों से ओझल न हो गई।ढंग से मै उसके मॉ बाप से भी विदा न ले पाया।उन तक पहुॅचना सम्भव भी न था।मार्ग्रेट अपनी तीनो बेटियों को लिये अपने माता पिता की गाड़ी मे बैठ चुकी थी।मार्ग्रेट के पिता की गाड़ी के सामने और पीछे पुलिस की दो गाड़ियॉ खड़ी थीं और इनके इर्द गिर्द सिर्फ तुर्क्स. उनके रिश्तेदार. फोटोग्राफर्स और जर्नलिस्टों की भींड़ जमा थी।पुलिसवाले बैरियर्स लगा कर इन्हे रोके खड़े थे।

ठीक सवा पॉच बजे मार्ग्रेट ने बर्लिन छोड़ा।दवाके बर्फबारी हो रही थी. फिर भी बजाय कोई बस लेने के मै पैदल ही टुर्मस्ट्रासे मेट्रो की तरफ बढ चला।

इस स्टाईना ने मुझे सिवाय निराशाओं के कुछ भी नही दिया. फिर भी मै सिर्फ एक बात पर बेहद खुश था कि मेरे पास एक ईश्वर है जो मेरी प्रार्थनाओं को नकारता नही है. उन्हे सुनता है।

इसी शाम ने मुझे आज तक आस्थावान बनाये रखा है।

प्रमोद कुमार सिंह